पाठ - नौबतखाने में इबादत

शब्दार्थ

1. **पंचगंगा** – काशी का एक प्रसिद्ध घाट जो मान्यतानुसार पाँच नदियों का संगमस्थान है
2. **घाट** – नदी, सरोवर या तालाब का वह किनारा जहाँ लोग पानी भरते
3. **ड्योढ़ी** – दरवाज़ा, फाटक, दहलीज़, द्वार या दरवाज़े के पास की ज़मीन, चौखट
4. **नौबतखाना** – वह स्थान जहाँ नक्कारे या नगाड़े बजते हैं
5. **मंगलध्वनि** – मांगलिक अवसरों या उत्सव आदि में होने वाली ध्वनि, मंगलगीत
6. **राग** – किसी ख़ास धुन में बैठाए हुए स्वर का ढाँचा
7. **भीमपलासी** – दिन के रागों में अति मधुर और कर्णप्रिय राग है
8. **मुलतानी** – भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग
9. **वाज़िब** – सही
10. **लिहाज** – शील, संकोच आदि के विचार से रखा जाने वाला ध्यान
11. **गोया** – वक्ता, बोलने वाला, सदृश
12. **मामाद्वय** – दो मामा
13. **वादक** – वाद्ययंत्र को बजाने वाला
14. **रियासतों** – मिलकियत, संपत्ति, शासन, हुकूमत
15. **रोज़नामचे** – एक रोजनामचा एक विस्तृत खाता है जो किसी व्यवसाय के सभी वित्तीय लेनदेन को रिकॉर्ड करता है, जिसका उपयोग भविष्य के सामंजस्य के लिए किया जाता है
16. **ड्योढ़ी** – दहलीज़
17. **खानदानी** – ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का, वंश परंपरागत, पैतृक, पुश्तैनी
18. **पेशा** – काम
19. **ननिहाल** – नाना – नानी का घर
20. **रीड** – रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है
21. **नरकट** – एक प्रकार की घास, नरकट एक घास है जिसके पौधे का तना खोखला गाँठ वाला होता है
22. **महत्ता** – महत्व, उपयोगिता, महिमा
23. **उस्ताद** – फ़ारसी और उर्दू में गुरु के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द, गायन-नृत्य आदि कलाओं की शिक्षा देने वाला
24. **परदादा** – प्रपितामह, पिता का दादा
25. **साहबजादे** – पुत्र
26. **मसलन** – उदाहरणस्वरूप, उदाहरणार्थ
27. **रियाज़** – अभ्यास, संगीत – नृत्य आदि कलाओं के अभ्यास में किया जाने वाला परिश्रम, मेहनत

egyanarchive

28.**मार्फत** – द्वारा

29.**साक्षात्कार** – आँखों के सामने उपस्थित होना, सामने आना, भेंट, मुलाकात, मिलन

30.**आसक्ति** – आसक्त होने की अवस्था या भाव, अनुरक्ति, अनुराग, लगन

31.**अबोध** – कच्ची, कम

32.**अनुभव** – प्रत्यक्ष ज्ञान, संवेदन, तज़ुर्बा, अहसास, (एक्सपीरिएंस)

33.**उकेरी** – उकेरने या खोदकर बेलबूटे बनाने का कार्य, नक्काशी करने की क्रिया

34.**वैदिक** – वेद संबंधी, वेद का, वेदों के अनुकूल

35.**उल्लेख** – वर्णन

36.**शास्त्रांतर्गत** – शास्त्रों के अनुसार

37.**सुषिर** – वाद्यों – संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो

38.**नाड़ी** – नरकट या रीड

39.**शाह** – बड़ा मुगल सम्राट, बादशाह, सुलतान

40.**मंगल** – कल्याण, भलाई, शुभ, आनंद, इच्छापूर्ति

41.**परिवेश** – वातावरण, माहौल

42.**प्रतिष्ठित** – सम्मानित, जिसकी स्थापना की गई हो, निश्चित, निर्धारित, प्रयुक्त

43.**प्रभाती** – एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है

44.**नायक** – लोगों को अपनी आज्ञा के अनुसार चलाने वाला व्यक्ति, नेता, राह दिखाने वाला, मार्गदर्शक, प्रधान, सरदार, अधिपति

45.**बरस** – वर्ष, साल

46.**सुर** – स्वर, आवाज़

47.**नेमत** – धन, पूँजी, संपत्ति, दौलत, समृद्धि ईश्वर की कृपा, ईश्वरीय देन, उपहार, वरदान

48.**सज़दा** – ईश्वर के लिए सर झुकाना, नतमस्तक होना, श्रद्धा या भक्ति में माथे को जमीन पर रखना, माथा टेकना

49.**इबादत** – बंदगी, आराधना, पूजा, उपासना, वंदना

50.**तासीर** – गुण, योग्यता, प्रकृति

51.**मेहरबान** – कृपालु, दयालु, अनुग्राहक, अनुग्राही, दयावान, दयाशील

52.**मुराद** – इच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा, मनौती, मन्नत

53.**शरण** – आश्रय, पनाह

54.**दुश्चिंता** – बुरी चिंता

55.**दुर्बलता** – दुर्बल होने की अवस्था या भाव, कमज़ोरी, दुबलापन

56.**तिलिस्म** – जादू, भ्रम, कोई अद्भुत कार्य, चमत्कार, करामात, अलौकिक या अद्भुत प्रतीत होने वाला कार्य

57.**गमक** – महक, सुगंध, गंध

egyanarchive

58.**मुहर्रम** – मुसलमानों का प्रमुख त्योहार, निषिद्ध किया हुआ, इस्लामी वर्ष का प्रथम महीना

59.**अज़ादारी** – शोक मनाना

60.**शिरकत** – एक साथ मिलकर कार्य में प्रवृत्त होना, साझेदारी, हिस्सेदारी

61.**नौहा** – मातम, स्यापा, मृतक के लिए रोना – पीटना, मातम के समय गाया जाने वाला गीत, शोकगीत

62.**अदायगी** – अदा करना या होना, भुगतान

63.**निषेध** – मनाही

64.**शहादत** – शहीद होने का भाव, देश हित में प्राण देना

65.**अज़ादारी** – किसी के मरने पर मातम या शोक मनाना

66.**परंपरा** – प्राचीन समय से चली आ रही रीति, परिपाटी, (ट्रैडिशन)

67.**सहज** – सरल, सुगम, स्वाभाविक, सामान्य, साधारण

68.**गमज़दा** – दुखी, रंजीदा, गमगीन, शोकसंतप्त

69.**माहौल** – वातावरण, परिवेश, परिस्थिति

70.**सुकून** – आराम, इतमीनान, शांति, अमन, धैर्य, सब्र, संतोष

71.**जुनून** – पागलपन, उन्माद, विक्षिप्तता, नशा, लगन

72.**रहस्यमय** – रहस्य पूर्ण, रहस्य से भरा

73.**बदस्तूर** – नियमपूर्वक, जिस प्रकार पहले से होता आया हो, उसी प्रकार से, बिना किसी परिवर्तन या हेर – फेर के, यथापूर्व, यथावत

74.**बालसुलभ** – बच्चों की तरह, बच्चों का-सा, शिशुवत

75.**नैसर्गिक** – प्राकृतिक, स्वाभाविक

76.**खारिज़** – नकारना

77.**सम** – सादृश्य, समानता

78.**हासिल** – जो कुछ हाथ लगा हो, लब्ध, प्राप्त

79.**मेहनताना** – पारिश्रमिक, मज़दूरी

80.**संगीतमय** – संगीत से भरा, लययुक्त

81.**आरोह** – अवरोह – उतार – चढ़ाव

82.**आयोजन** – समारोह, कार्यक्रम, प्रबंध, इंतज़ाम, बंदोबस्त, व्यवस्था

83.**शास्त्रीय** – शास्त्र संबंधी, शास्त्रानुमोदित, शास्त्रसम्मत, शास्त्रीय ज्ञान पर आश्रित

84.**गायन** – गाने की क्रिया या भाव, गाना

85.**वादन** – बोलना, वाद्ययंत्र को बजाना

86.**उत्कृष्ट** – श्रेष्ठ, उच्च कोटि का, उन्नत

87.**अपार** – अनंत, असीम, अथाह, बहुत अधिक

egyanarchive

88.**पुश्तों** – पीढ़ी, वंश परंपरा में क्रम से बढ़ने वाला स्थान
89.**प्रतिष्ठित** – सम्मानित
90.**तालीम** – शिक्षा – दीक्षा, ज्ञान, उपदेश
91.**अदब** – शिष्टाचार, बड़ों का आदर-सम्मान, उनके प्रति विनीत व्यवहार, कायदा, नियम
92.**रसिकों** – जिसके हृदय में सौंदर्य-प्रेम-भक्ति-कला आदि के प्रति अनुराग हो
93.**उपकृत** – कृतज्ञ, अहसानमंद
94.**अपार** – जिसका पार न हो, अनंत, असीम, अथाह, बहुत अधिक, असंख्य, अतिशय
95.**तहज़ीब** – शिष्टाचार, सज्जनता
96.**आशय** – तात्पर्य, अभिप्राय, मतलब
97.**सरगम** – सात सुरों का समूह, सातों सुरों के उतार-चढ़ाव, किसी गीत या ताल में लगने वाले स्वरों का उच्चारण
98.**परवरदिगार** – ईश्वर, भगवान
99.**नसीहत** – सदुपदेश, शिक्षा, सीख, राय, लाभप्रद सम्मति, अच्छी सलाह
100. **करतब** – कार्य, कर्म, काम, कमाल, कौशल, करामात
101. **प्रतिष्ठा** – मान – मर्यादा, सम्मान, इज़्ज़त
102. **भारतरत्न** – भारत सरकार का एक सर्वोच्च सम्मान या उपाधि जो उच्चकोटि के पांडित्य, अद्वितीय राष्ट्रसेवा, विश्वशांति के प्रयत्न आदि के लिए दिया जाता है
103. **तहमद** – धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा
104. **लाड़** – दुलार, स्नेह, प्यार, वात्सल्य प्रेमपूर्ण व्यवहार
105. **पक्का महाल** – काशी विश्वनाथ से लगा हुआ अधिकतम इलाका
106. **लुप्त** – छिपा हुआ, जो छिप गया हो, अदृश्य, गायब
107. **साधक** – योगी, तपस्वी, साधन, ज़रिया, साधना करने वाला
108. **थापों** – ढोलक, तबले, मृदंग आदि बजाते समय उस पर हथेली से किया जाने वाला आघात
109. **मरण** – मृत्यु
110. **नायाब** – जो जल्दी न मिले, जो सरलता से न मिलता हो, अप्राप्य, दुर्लभ, बहुत बढ़िया
111. **मानद** – मान या प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला, किसी के सम्मान में दिया जाने वाला
112. **अलंकृत** – विभूषित, सम्मानित, सजाया – सँवारा हुआ
113. **अजेय** – जिसे जीता न जा सके, अतिशक्तिशाली, बाहुबली
114. **संपूर्णता** – पूर्णता, समग्रता, अंत, समाप्ति
115. **जिजीविषा** – जीने की इच्छा या उत्कट कामना, जीवटता, जीवन की चाह

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर: शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। शहनाई बजाने के लिए जिस रीड का प्रयोग किया जाता है, वह डुमराँव में सोन नदी के किनारे ही पाई जाती है। इसके साथ ही डुमराँव प्रसिद्ध शहनाई कादक 'बिस्मिल्ला खाँ' का जन्म-स्थान भी है।

प्रश्न 2. 'बिस्मिल्ला खाँ' को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर: 'बिस्मिल्ला खाँ' को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उनकी शहनाई से हमेशा ही मंगलध्वनि निकलती रही। वे काशी के विश्वनाथ, बालाजी मन्दिर में अनेक मांगलिक उत्सव-पर्वों पर शहनाई बजाते थे। इसके साथ ही उनसे बढ़कर और दूसरा सुरीला शहनाई वादक नहीं हुआ है।

प्रश्न 3. सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

उत्तर: सुषिर-वाद्यों से अभिप्राय है - मुँह से फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य। यह वाद्य छेद वाले और अन्दर से खोखली या पोली नली वाले होते हैं। जैसे - बाँसुरी, शहनाई, नागस्वरम्, बीन आदि। नाड़ी या रीड से युक्त वाद्यों को 'नय' कहा जाता है। शहनाई की ध्वनि सबसे मधुर होने से इसे 'शाहनेय' अर्थात् सुषिर वाद्यों में 'शाह' की उपाधि दी, गयी, क्योंकि यह वाद्य सभी सुषिर वाद्यों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए

(क) 'फटा सर न बख्शें। लंगिया का क्या है.आज फटी है. तो कल सी जाएगी।

(ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

उत्तर:

(क) जब एक दिन 'बिस्मिल्ला खाँ' की एक शिष्या ने उन्हें फटा तहमद पहनकर आने वाले लोगों से मिलते देखकर कहा कि बाबा यह फटा तहमद न पहना करो। तब उन्होंने कपड़ों की महत्ता न देते हुए सुर की महत्ता दर्शायी। वे खुदा से यही माँगते थे कि उन्हें फटा सुर न देना। उनका स्वर ठीक (मधुर) ही रखना। फटा कपड़ा तो सिल सकता है पर फटा सुर नहीं सिला जा सकता। उससे तो बदनामी ही मिलती है।

(ख) ''बिस्मिल्ला खाँ'' खुदा से याचना करते थे कि वह उन्हें शहनाई वादन में एक ऐसा सच्चा स्वर प्रदान कर दे, जो अपने मार्मिक प्रभाव से सुनने वालों की आँखों में सहज आनन्द की अनुभूति करा दे और उनकी आँखों से आँसू टपकने लगें। अर्थात् सुनने वाले उनकी शहनाई को सुनकर गदगद हो उठे।

egyanarchive

प्रश्न 5. काशी में हो रहे कौन से परिवर्तन 'बिस्मिल्ला खाँ' को व्यथित करते थे?

उत्तर: काशी में पुरानी परम्पराएँ लुप्त हो रही थीं। खान-पान की पुरानी चीजें (देशी घी से बनी कचौड़ी जलेबी) बेचने वाले व मलाई-बर्फ वाले वहाँ से चले गये थे; न ही अब संगीत, साहित्य और अदब का वैसा मान रह गया था। हिन्दुओं और मुसलमानों का पहला जैसा मेल-जोल नहीं रहा। इसके साथ ही संगीतकारी का वैसा मान भी.. नहीं रहा। ये सभी बातें 'बिस्मिल्ला खाँ' को व्यथित करती थीं।

प्रश्न 6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि

(क) 'बिस्मिल्ला खाँ' **मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।**

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

उत्तर:

(क) 'बिस्मिल्ला खाँ' हिन्दू और मुसलमानों की मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे। एक ओर वे सच्चे मुसलमान थे। वे मुस्लिम धर्म के सभी त्योहारों और उत्सवों को पूरी श्रद्धा के साथ मनाते थे। पाँचों समय की नमाज श्रद्धा के साथ अदा करते थे। मुहर्रम भी बड़ी श्रद्धा से मनाते थे। मुहर्रम की आठवीं तारीख को वे पैदल चलते, नौहा बजाते थे। इसके साथ ही वे काशी विश्वनाथ और बालाजी के मन्दिर में शहनाई बजाते थे। गंगा के प्रति सच्ची श्रद्धा रखते थे। काशी से बाहर रहते हुए भी विश्वनाथ व बालाजी के मन्दिर की ओर मुँह करके प्रणाम किया करते थे। इसलिए वे मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) 'बिस्मिल्ला खाँ' एक सच्चे इंसान थे। उन्होंने कभी धार्मिक कट्टरता तथा तंगदिली नहीं दिखाई। उन्होंने काशी में रहते हुए जहाँ काशी की परम्पराओं को निभाया वहीं मुसलमान होते हुए अपने धर्म की परम्पराओं का भी सहजता के साथ निर्वहन किया। उन्होंने खुदा से हमेशा ही सुर माँगा। यद्यपि वे जीवन में फटेहाल रहे लेकिन उन्होंने खुदा से अपने लिए धन नहीं माँगा। 'भारतरत्न' आदि सर्वोच्च सम्मान पाक रहे।

egyanarchive

प्रश्न 7. 'बिस्मिल्ला खाँ' के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें, जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया।

उत्तर: 'बिस्मिल्ला खाँ' के संगीत-जीवन को निम्नलिखित परम्पराओं और लोगों ने समृद्ध करने में अपना सहयोग दिया रसूलन बाई और बतूलन बाई की गायिकी ने उन्हें संगीत की ओर आकर्षित किया, क्योंकि जब भी वे बालाजी के मंदिर जाते थे, तब रास्ते में गुजरते समय उन्हें तरह-तरह के बोल, ठुमरी, टप्पे, दादरा आदि सुनने को मिलते थे। जिससे उनके मन में संगीत के प्रति ललक जगी।

बाद में वे अपने नाना को मधुर स्वर में शहनाई बजाते देखते थे तो उनकी शहनाई को खोजा करते थे। मामू जान 'अलीबख्श' जब शहनाई बजाते-बजाते सम पर आते थे तो 'बिस्मिल्ला खाँ' धड़ से एक पत्थर जमीन पर मारा करते थे।

इस प्रकार उन्होंने संगीत में दाद देना सीखा। इसके साथ ही वे कुलसुम की कचौड़ी तलने की कला में भी संगीत का आरोह-अवरोह देखा करते थे। अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों ने भी उनकी साधना को समृद्ध किया।

रचना और अभिव्यक्ति -

प्रश्न 8. 'बिस्मिल्ला खाँ' के व्यक्तित्व की कौन-कौनसी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर: 'बिस्मिल्ला खाँ' के व्यक्तित्व में समायी अनेक विशेषताओं में से निम्नलिखित विशेषताओं ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया

1. धार्मिक सौहार्द-'बिस्मिल्ला खाँ' हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल थे। वे सच्चे मुसलमान के रूप में पाँचों बार की नमाज श्रद्धा के साथ अदा करते थे, तीज-त्योहारों को बखूबी निभाते थे। मुहर्रम तो वे पूरे दस दिन तक शोक से मनाते थे। साथ ही वे बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मन्दिर में नित्य शहनाई वादन करते थे और हिन्दुओं की पावन नदी गंगा को 'मैया' कहा करते थे।

2. खुदा के प्रति आस्थावान-'बिस्मिल्ला खाँ' खुदा के प्रति आस्थावान थे। पाँचों बार की नमाज पढ़ना उनका नियमित कार्य था। वे नमाज पढ़ते समय खुदा से सच्चे सुर की याचना किया करते थे। इसके साथ ही वे अपनी शहनाई की प्रशंसा को खुदा को ही समर्पित करते थे। वे कहा करते थे कि हे खुदा, फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जायेगी।

3. सरलता और सादगी-'बिस्मिल्ला खाँ' बेमिसाल शहनाई वादक थे। इसीलिए भारत के अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद उपाधियाँ दीं। उन्हें 'भारतरत्न' प्राप्त हुआ। फिर भी उन्हें गर्व और अभिमान छू नहीं गया था। वे सरलता, सादगी और गरीबी की जिंदगी जीते रहे।

4. रसिक और विनोदी स्वभाव-'बिस्मिल्ला खाँ' बचपन से ही रसिक स्वभाव के थे। वे रसूलन बाई और बतूलन बाई की गायिकी के रसिया थे। जवानी में वे कुलसुम हलवाइन और अभिनेत्री सुलोचना के भी रसिया बने। वे जलेबी और कचौड़ी के भी शौकीन थे। वे बात भी करने में चतुर थे। जब उनकी शिष्या ने 'भारतरत्न' का हवाला देकर उन्हें फटी तहमद न पहनने के लिए कहा तो फट से बोले-"ई भारतरत्न शहनईया पर मिला है, लुंगिया पर नहीं।"

प्रश्न 9. मुहर्रम से 'बिस्मिल्ला खाँ' के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

मुहर्रम से बिस्मिल्ला ख़ाँ के जुड़ाव को बताइए।

उत्तर: 'बिस्मिल्ला खाँ' आस्था-भावना से मुहर्रम में भाग लेते थे। वे मुहर्रम के दस दिनों तक शोक मनाते थे। इन दिनों वे

egyanarchive

किसी प्रकार का मंगल वाद्य नहीं बजाते थे और न कोई राग-रागिनी बजाते थे। इसके साथ ही दालमंडी से चलने वाले मुहर्रम के जुलूस में पूरे उत्साह के साथ आठ किलोमीटर रोते हुए नौहा बजाते हुए चलते थे।

प्रश्न 10. 'बिस्मिल्ला खाँ' कला के अनन्य उपासक थे।' तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: 'बिस्मिल्ला खाँ' संगीत-कला के अनन्य उपासक थे। वे शहनाई बजाने की कला में प्रवीण थे। उन्होंने अस्सी वर्ष तक लगातार शहनाई बजाई। वे शहनाई वादन में बेजोड़ थे। वे गंगा-तट पर बैठकर घंटों रियाज करते थे। वे अपनी कला को ईश्वर की उपासना मानते थे। वे इसके विकास के लिए खुदा से सुर बखाने की माँग करते थे। इसके साथ ही वे अपने पर झल्लाते भी थे, क्योंकि उनके अनुसार उन्हें अब तक शहनाई को सही ढंग से बजाना क्यों नहीं आया? इससे स्पष्ट होता है कि वे सच्चे कला उपासक थे।

भाषा अध्ययन -

प्रश्न 11. निम्नलिखित मिश्र वाक्यों के उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए।

(क) यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।

(ख) रीड अन्दर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूंका जाता है।

(ग) रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

(घ) उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।

(ङ) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है।

(च) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

उत्तर:

(क) (i) यह जरूर है। (प्रधान उपवाक्य)
(ii) शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। (संज्ञा उपवाक्य)

(ख) (i) रीड अन्दर से पोली होती है। (प्रधान उपवाक्य)
(ii) जिसके सहारे शहनाई को फूंका जाता है। (विशेषण उपवाक्य)

(ग) (i) रीड नरकट से बनाई जाती है। (प्रधान उपवाक्य)
(ii) जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। (विशेषण उपवाक्य)

(घ) (i) उनको यकीन है। (प्रधान उपवाक्य)
(ii) कभी खुदा यूँ ही मेहरबान होगा। (संज्ञा उपवाक्य)

egyanarchive

(ङ) (i) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है। (प्रधान उपवाक्य)

(ii) जिसकी गमक उसी में समाई है। (विशेषण उपवाक्य)

(च) (i) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है। (प्रधान उपवाक्य)

(ii) पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिन्दा रखा। (संज्ञा उपवाक्य)

प्रश्न 12. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्रित वाक्यों में बदलिए

(क) इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं।

(ख) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परम्परा है।

(ग) धत् ! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नहीं।

(घ) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

उत्तर:

(क) यही एक बालसुलभ हँसी है जिसमें कई यादें बंद हैं।

(ख) काशी में संगीत आयोजन की एक ऐसी परम्परा है जो प्राचीन और अद्भुत है।

(ग) धत् ! पगली यह भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं मिला।

(घ) यह काशी का नायाब हीरा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

egyanarchive

पाठेतर सक्रियता -

प्रश्न - कल्पना कीजिए कि आपके विद्यालय में किसी प्रसिद्ध संगीतकार के शहनाई वादन का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की सूचना देते हुए बुलेटिन बोर्ड के लिए नोटिस बनाइए।

उत्तर:

सूचना

विद्यालय के सभी शिक्षार्थियों को सूचित किया जाता है कि शनिवार, दिनांक पाँच नवम्बर, 20XX को विद्यालय के 'तुलसी सभागार' में सायं 5 बजे से 8 बजे तक 'शहनाई वादन' का कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। इस अवसर पर भारत के जाने-माने शहनाई वादक उस्ताद अलीखाँ शहनाई वादन करेंगे। सभी छात्र एवं शिक्षक महानुभाव इस कार्यक्रम में आमन्त्रित हैं।

आपसे अनुरोध है कि समय से दस मिनट पूर्व अपना स्थान ग्रहण कर लें।

संयोजक
सांस्कृतिक समिति

प्रश्न - आप अपने मनपसन्द संगीतकार के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।
उत्तर: मेरे मनपसन्द संगीतकार हैं - जयपुर के प्रसिद्ध वीणावादक पं. विश्वमोहन भट्ट। इनका वीणावादन सर्वोत्कष्ट कलापर्ण माना जाता है और देश-विदेश में इनकी कला की विशेष ख्याति है। पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनका वीणा-वादन सुनने से स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रश्न - हमारे साहित्य, कला, संगीत और नृत्य को समृद्ध करने में काशी (आज के वाराणसी) के योगदान पर चर्चा कीजिए।
उत्तर: विद्यार्थी कक्षा में इसकी चर्चा करें।
काशी – जिसे आज वाराणसी के नाम से जाना जाता है, भारतीय संस्कृति और सभ्यता का एक प्राचीन केन्द्र रहा है।
साहित्य – काशी भारतीय साहित्यिक परंपरा का अद्भुत केंद्र रही है। संस्कृत साहित्य से लेकर हिंदी, अवधी और भोजपुरी साहित्य तक, काशी ने अनेक महान साहित्यकारों को जन्म दिया। तुलसीदास, कबीर, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद जैसे कवियों और लेखकों ने यहीं से अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय साहित्य को समृद्ध किया।
कला – चित्रकला, मूर्तिकला और हस्तशिल्प के क्षेत्र में भी काशी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ की पारंपरिक बनारसी साड़ी, लकड़ी की नक्काशी और पीतल के शिल्प कार्य विश्वप्रसिद्ध हैं।
संगीत – भारतीय शास्त्रीय संगीत में काशी का योगदान अविस्मरणीय है। बनारस घराने की स्थापना यहीं हुई, जिसने ठुमरी, दादरा, कजरी और चैती जैसी शैलियों को समृद्ध किया। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे और पंडित रविशंकर जैसे संगीतज्ञ काशी की देन हैं।
नृत्य – कथक नृत्य शैली का बनारस घराना भी यहीं पनपा। इस घराने के नृत्यांगनों ने कथक में अभिव्यक्ति, लय और भाव को नई ऊँचाइयाँ दीं।
धार्मिक और सांस्कृतिक समागम – काशी में प्रतिवर्ष अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव आयोजित होते हैं, जैसे गंगा महोत्सव, जो कला, संगीत और नृत्य के अद्भुत संगम का उदाहरण हैं।
निष्कर्ष – इस प्रकार, काशी ने साहित्य, कला, संगीत और नृत्य के क्षेत्र में जो योगदान दिया है, वह भारत की सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न - काशी का नाम आते ही हमारी आँखों के सामने काशी की बहुत-सी चीजें उभरने लगती हैं, वे कौन कौन सी हैं?
उत्तर: बनारसी साड़ी, बनारसी आम, बनारसी पान आदि। इनके साथ ही काशी संस्कृति, कला, शिल्प, साहित्य और

egyanarchive

विद्वत्ता का केन्द्र रहा है। इनसे जुड़ी चीजों के साथ ही गंगा के किनारे बने सुन्दर घाट, बाबा विश्वनाथ और बालाजी का मन्दिर आदि भी याद आने लगते हैं।

egyanarchive